परिवार की जिम्मेदारी संभालतीं ग्रामीण महिलाएं

महिला समूह से जुड़ने के बाद ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक आजादी मिल गयी है. समूह से मिले प्रशिक्षण, प्रोत्साहन और सहयोग के दम पर आज ग्रामीण महिलाएं इस मुकाम पर पहुंच गयी हैं कि सखी मंडल के कार्यों के साथ-साथ अपने परिवार की जिम्मेदारी भी बखूबी संभाल रही हैं. अपनी कमाई से परिवार चलाने में पूरा सहयोग कर रही हैं. समूह से कम ब्याज पर मिलनेवाला लोन महिलाओं के लिए संजीवनी का काम कर रहा है. इसकी बदौलत ग्रामीण महिलाएं लोन लेकर कई तरह के व्यवसाय कर रही हैं. गौ पालन से लेकर टेंट हाउस तक के कारोबार में महिलाएं अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं. इतना ही नहीं, अपने पति को रोजगार से भी जोड़ रही हैं.

अचार से दीदियों को मिला स्वरोजगार

अचार बनाने का प्रशिक्षण लेतीं ग्रामीण महिलाएं.

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत मनोहरपुर प्रखंड में एसवीइपी के माध्यम से तीन दिवसीय अचार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया. शिविर में प्रखंड के सात कलस्टर के सात-सात दीदियों को अचार बनाने का तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया. अचार बनाने के प्रशिक्षण में शामिल हुईं दीदियां इस बात को लेकर काफी खुश थीं कि प्रशिक्षण के बाद अचार बनाना सीख जायेंगी. प्रशिक्षण देने के लिए केरल से दो शेफ को बुलाया गया था. प्रशिक्षण के पहले दिन महिलाओं को एक वीडियो के माध्यम से बताया गया कि अचार के व्यवसाय से महिलाएं किस प्रकार से जुड़ते हुए अन्य ग्रामीण महिलाओं को भी जोड़ती हैं. अचार प्रशिक्षण के बाद कैसे महिलाएं 200 प्रकार के अचार और जेम बना लेती हैं. उनके अचार की मांग बहुत है. अचार बनाने के लिए उन्हें कई बार सम्मानित भी किया गया है. वीडियो को देखने के बाद महिलाएं काफी उत्साहित हुईं. उन्होंने बताया कि पहले केवल एक प्रकार का अचार बनाना जानती थीं, लेकिन अब प्रशिक्षण हासिल करने के बाद कई प्रकार का अचार बना पायेंगी. अब महिलाएं नींबू, आम, करैला, बीट, मछली, चिकन, गाजर, ओल, अदरक, इमली आदि का अचार बना पायेंगी. पहला दिन वीडियो दिखाने के बाद महिलाओं को अचार में डालने वाले विभिन्न तरह के मसाले और उसकी मात्रा की जानकारी दी गयी. अचार बनाने के लिए किस प्रकार से सामग्री तैयार की जाती है, इसकी भी जानकारी दी गयी. प्रशिक्षण के दूसरे दिन महिलाओं को खुद से अचार बनाने का जिम्मा दिया गया. ग्रामीण महिलाओं ने अच्छे तरीके से अचार बनाया. महिलाओं ने कहा कि पहले घर में जो भी मिलता था, उससे वो अचार बनाती थीं. पर, अब मछली और चिकन से भी अचार बना सकती हैं. अचार बनाने के लिए सामानों को किस प्रकार से काटना है, फ्राई करना है और कितना मसाला डालना है, पूरी जानकारी मिल गयी है. मौके पर दीदियों द्वारा बनाये गये अचार का स्वाद सभी ने चखा. दीदियों द्वारा बनाये गये आचार की सबने तारीफ की. प्रशिक्षण पूरा होने के बाद मनोहरपुर बीपीएम ने महिलाओं को प्रोत्साहित भी किया. उन्होंने कहा कि महिलाओं द्वारा तैयार किये गये अचार को बेचने के लिए बीआरसी सहयोग करेगा.

आशा तिग्गा

प्रखंड : मनोहरपुर
जिला : पश्चिमी सिंहभूम

वित्तीय साक्षरता से जागरूक हुईं आशा

मुनिया देवी

प्रखंड : डुमरी
जिला : गिरिडीह

वित्तीय साक्षरता का प्रशिक्षण लेतीं महिलाएं.

गिरिडीह जिले के डुमरी प्रखंड अंतर्गत जामतारा पंचायत स्थित बेड़वा गांव की रहनेवाली आशा वित्तीय साक्षरता का प्रशिक्षण लेकर अब अपने गांव, ग्राम संगठन और कलस्टर संगठन की सखी मंडल और ग्रामीणों को जागरूक कर रही हैं. इसके साथ बीएमएमयू डुमरी, सीसी और बैंक सखियों को वित्तीय साक्षरता के बारे में चार्ट के माध्यम से विस्तारपूर्वक समझा रही हैं. वित्तीय साक्षरता के बारे में समझाते हुए आशा बताती हैं कि वे कैशलेस बैंकिंग सेवा को अपनाएं. वित्तीय नियोजन के अनुसार खर्च की योजना बनायें, ताकि अपनी सुविधा अनुसार बैंकिंग कार्य कर सकें और उसके अनुसार खर्च कर सकें. आकस्मिक घटनाओं से बचाव के लिए बीमा के माध्यम से बचत करना चाहिए, ताकि बुरे वक्त में पैसों की कमी न हो. उन्होंने कहा कि हमें उधार भी समझदारी से लेना चाहिए, ताकि कर्ज के बोझ से भी बच सकें. अधिक से अधिक बचत करने की कोशिश करना चाहिए. भविष्य के लिए भी बचत करके चलना चाहिए. आशा बताती हैं कि कई बार बिना वित्तीय नियोजन के अधिक कर्ज लेने से जीवन में बुरी परिस्थितियों से भी गुजरना पड़ सकता है. यही कारण है कि सभी को वित्तीय साक्षरता की जानकारी होनी चाहिए. आशा के साथ सखी मंडल की दो और दीदियां भी प्रशिक्षण के दौरान सहयोग करती हैं. आशा और दोनों महिलाओं को प्रशिक्षण देने के बदले 500 रुपये मिलते हैं. इससे उन्हें आमदनी भी हो रही है और समाज में एक अलग पहचान भी मिल रही है. वित्तीय साक्षरता की जानकारी पाने के बाद ग्रामीण महिलाएं काफी खुश हुईं.

जोहार से महिलाओं के लिए आसान हुआ मछली पालन

सावित्री देवी

प्रखंड : निरसा
जिला : धनबाद

कार्यशाला के दौरान मत्स्य पालन का प्रशिक्षण लेतीं महिलाएं.

धनबाद जिले के निरसा प्रखंड अंतर्गत बीएमएमयू में कार्यशाला का आयोजन किया गया. इसमें नेशनल रूरल लाइवलीहुड मिशन द्वारा संचालित जोहार परियोजना के अंतर्गत मत्स्य पालन को लेकर विस्तृत जानकारी दी गयी. कार्यशाला में जोहार परियोजना के पदाधिकारी, बीपीओ, डीएमटी, मत्स्य मित्र समेत सखी मंडल की महिलाएं शामिल हुईं. कार्यशाला में महिलाओं को मत्स्य पालन के फायदे बताये गये, वहीं महिलाओं को मछली पालन करने के लिए प्रोत्साहित भी किया गया. डीएमटी कविता सिंह ने बताया कि जोहार परियोजना से जुड़ी महिलाओं को मछली पालन से अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने का सुनहरा मौका मिलता है. इस मौके को महिलाएं न गंवायें. उन्होंने कहा कि आज के जमाने में हर क्षेत्र में महिलाएं आगे बढ़ कर सफलता का परचम लहरा रही हैं. निरसा क्षेत्र की महिलाएं भी सरकार के सहयोग से जोहार का लाभ लेकर मत्स्य पालन करना चाहती हैं. मत्स्य पालन में बेहतर प्रदर्शन कर महिलाएं यह साबित करना चाहती हैं कि वो किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं. इस कार्यशाला के दौरान महिलाओं को मछली पालन के साथ-साथ बीज खरीदने से लेकर इसके वितरण तक के बारे में विस्तार से बताया गया. महिलाओं को बताया गया कि बीज वितरण से लेकर मछली को बाजार में बेचने तक की सारी प्रक्रिया महिलाएं ही करेंगी. कार्यशाला में शामिल महिलाएं मत्स्य पालन के बारे में जानकारी हासिल करने के बाद काफी खुश दिखीं. उन्होंने कहा कि वो जोहार परियोजना के तहत चल रहे और भी कार्यों को करेंगी, जिससे उनकी आमदनी बढ़ेगी और गांव-समाज में उनको पहचान मिलेगी.

बांस की टोकरी से बदली जिंदगी

नीलम कुमारी

प्रखंड : डंडई
जिला : गढ़वा

गढ़वा जिले के डंडई प्रखंड अंतर्गत पचौर गांव की उर्मिला देवी बांस की टोकरी बनाकर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार कर रही हैं. पहले उनके परिवार की स्थिति बहुत खराब थी. पति गांव से बाहर मजदूरी करते थे. उर्मिला बांस की टोकरी बनाती थीं, लेकिन कभी-कभी पैसे के अभाव में वह बांस खरीदने में असमर्थ रहती थीं. इस वजह से टोकरी नहीं बना पाती थीं. इसके बाद उर्मिला ने अपना कारोबार बढ़ाने का निर्णय लिया और वंदना आजीविका सखी मंडल से जुड़कर समूह से 2500 रुपये का लोन लिया. उस रुपये से उन्होंने कच्चा बांस खरीदा और टोकरी, सूप आदि बना कर बेचना शुरू किया. इस कार्य में उनके पति का भी पूरा सहयोग मिला. उर्मिला बताती हैं कि पहले जब वे साहूकार से ऋण लेती थीं, तो उन्हें 5-10 प्रतिशत तक ब्याज देना पड़ता था. आज सखी मंडल से जुड़कर उर्मिला जैसी महिलाओं को कम ब्याज पर ऋण मिल रहा है, ताकि वह अपने कारोबार को आगे बढ़ा सकें. उर्मिला कहती हैं कि आज सखी मंडल की वजह से उन्हें कम ब्याज पर ऋण मिल रहा है. उन्हें जब भी जरूरत होती है, सखी मंडल से ऋण लेकर बांस खरीद लेती हैं.

समूह ने दिलायी नयी पहचान

निर्मला कुमारी

प्रखंड : कर्रा
जिला : खूंटी

खूंटी जिले के कर्रा प्रखंड अंतर्गत तिलमी गांव की ममिता देवी समूह से जुड़ कर अपना जीवन संवार रही हैं. समूह से लोन लेकर उन्होंने अपनी दुकान को नयी पहचान दिलायी. ममिता की आर्थिक स्थिति पहले बहुत खराब थी. पति का छोटे स्तर पर टेंट हाउस और साउंड सिस्टम का व्यवसाय था, लेकिन दुकान में साउंड बॉक्स की कमी थी. इस कारण ऑर्डर बहुत कम आते थे. इसके कारण आमदनी बहुत कम होती थी. इतनी आमदनी से घर का खर्च चलाना मुश्किल होता था. इस बीच ममिता को महिला समूह की जानकारी मिली और वर्ष 2018 में वो चांदनी महिला मंडल से जुड़ गयीं. समूह से जुड़ने के बाद समूह से छोटा लोन लेकर घर चलाने लगीं. इसके बाद उन्होंने 50 हजार का लोन समूह से लिया. इस राशि से अपने पति के टेंट हाउस और साउंड सिस्टम व्यवसाय को बड़ा किया. अब शादी एवं पार्टी में अधिक ऑर्डर आने लगे. इससे कारोबार चल निकला. अब उनके टेंट हाउस को लोग पुष्पा टेंट हाउस के नाम से जानने लगे हैं. दुकान से आमदनी होने पर समय से लोन चुका रही हैं और परिवार के साथ खुशहाल जीवन जी रही हैं.

मशरूम खेती से बढ़ी आमदनी

सुषमा कुमारी

प्रखंड : सदर
जिला : हजारीबाग

हजारीबाग जिले के सदर प्रखंड अंतर्गत सिलवार कला पंचायत के सिलवार गांव की सोनी मशरूम पालन से जुड़ कर आगे बढ़ते हुए परिवार के साथ खुशहाल जिंदगी जी रही हैं. पहले उनकी जिंदगी ऐसी नहीं थी. दिनभर वो घर के कार्यों में व्यस्त रहती थीं. इसके कारण कोई ऐसा काम नहीं कर पाती थीं जिससे वो पैसे कमा सकें. घरवाले भी बहुत परेशान करते थे. इस बीच उन्हें महिला समूह की जानकारी मिली. समूह की पूरी जानकारी हासिल करने के बाद सोनी दुर्गा सखी मंडल से जुड़ गयीं. समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने समूह से 6000 रुपये का लोन लिया और समूह की अन्य दीदियों की सलाह से अपने घर में मशरूम की खेती शुरू कीं. मशरूम की खेती से अब उन्हें काफी फायदा हुआ है. घर बैठे 12-13 हजार रुपये की मासिक आमदनी होने लगी. इससे जहां वह आसानी से अपना घर चला रही हैं, वहीं समय पर लोन भी चुकता कर रही हैं. उनके घर से ही मशरूम की बिक्री हो जाती है. इस तरह से सोनी अब खुशहाल जिंदगी जी रही हैं. अब परिवारवाले भी उनका पूरा सहयोग कर रहे हैं.

दुकान से आगे बढ़ रहीं होमीय

किरण देवी

प्रखंड : कुंडहित
जिला : जामताड़ा

जामताड़ा जिले के कुंडहित प्रखंड अंतर्गत बाघाशोला गांव स्थित मुस्लिम टोला की रहनेवाली होमीय कुमारी समूह से जुड़ कर किराना दुकान खोली हैं. इससे न सिर्फ उनकी जिंदगी की रफ्तार तेज हुई है, बल्कि वह स्वावलंबी भी बन गयी हैं. होमीय अपने पति करण मंडल, एक बच्चा और सास के साथ रहती हैं. होमीय शुरू से ही मेहनती हैं. अपनी मेहनत के बल पर आगे बढ़ना चाहती हैं, पर उन्हें कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था. इस बीच उन्हें गांव में बन रहे महिला समूह की जानकारी मिली. समूह से जुड़ने के फायदे के बारे में जानने के बाद होमीय साथी आजीविका सखी मंडल से जुड़ गयीं. समूह से जुड़ने के बाद होमीय ने समूह से 20 हजार रुपये का लोन लिया. इस लोन की राशि से वह एक किराना दुकान खोलीं. दुकान में अब हर रोज 1500 रुपये की बिक्री हो जाती है. इससे वह अब अपने परिवार की अच्छी तरह से देखरेख कर रही हैं. अब परिवार के अन्य सदस्य भी बहुत खुश हैं. बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ाई कर रहे हैं. होमीय की सफलता को देखकर अब उनकी सास भी समूह से जुड़ना चाह रही हैं.

गौ पालन से परिवार में आयी खुशहाली

अपनी गाय को चारा खिलातीं भानुमति देवी.

लक्ष्मी देवी

प्रखंड : सिल्ली
जिला : रांची

रांची जिला अंतर्गत सिल्ली प्रखंड के लोटा गांव की भानुमति देवी समूह से जुड़ कर न सिर्फ अपने परिवार को विपरीत परिस्थिति से बाहर निकालीं, बल्कि अपने पति का भी सहारा बनीं. समूह से जुड़ने से पहले उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी. दरअसल उनके पति 2011 में पंचायत समिति का चुनाव लड़े. चुनाव लड़ने में उन्होंने अपनी जमा पूंजी तीन लाख रुपये खर्च कर दी. वह चुनाव भी हार गये. इसका उन पर गहरा असर पड़ा और वह घर छोड़ कर चले गये. तीन साल बाद जब वो घर लौटे, तब भी उनकी स्थिति अच्छी नहीं थी. पैसे को लेकर हमेशा चिंतित रहते थे. इसके बाद भानुमति ने अपने पति को समझाया कि फिर से कुछ काम करके एक नयी शुरुआत करते हैं. पर, पैसे की दिक्कत थी. इस बीच वर्ष 2016 में उन्हें महिला समूह की जानकारी मिली और वो प्रेरणा महिला समूह से जुड़ गयीं. काम करने के लिए पैसे की परेशानी होने पर भानुमति ने समूह से 23 हजार रुपये का लोन लिया और एक गाय खरीदीं. गाय के लिए एक शेड भी बनवाया. कुछ समय बाद गाय से एक बछड़ा भी हुआ. दूध बेच कर अब वो हर महीना समूह का लोन भी चुकाने लगीं. लोन चुकाने के बाद फिर से भानुमति ने ग्राम संगठन से 50 हजार रुपया का लोन लिया. इस पैसे से उन्होंने पांच गाय और खरीदी. अब उनके घर में कुल छह गाय और पांच बछड़े हैं. हर दिन 20 से 22 लीटर दूध का उत्पादन हो रहा है. इस दूध की बिक्री से आमदनी बढ़ने लगी. इससे समूह से लिया गया लोन भी चुकता होने लगा. इस काम में उन्हें पति का पूरा सहयोग मिलता है. हर रोज गाय को चारा खिलाने के बाद दूध की बिक्री में पति सहयोग करते हैं. दूध की कमाई से बचत किये गये पैसे से भानुमति के पति ने फर्नीचर की दुकान खोली. इससे उनकी आर्थिक परेशानियां कुछ कम हो गयी हैं. कमाई बढ़ने के बाद अब उनके बच्चे निजी स्कूल में पढ़ते हैं. छह गाय की देखभाल के लिए भानुमति ने एक ग्रामीण महिला को काम पर रखा है. इससे एक महिला को रोजगार भी मिल गया है. गाय का गोबर अपने खेत में डालती हैं. इससे खेत भी हरा-भरा रहता है. अब घर की समस्याएं धीरे-धीरे दूर होने लगी हैं. अब पूरा परिवार खुशहाल है.

epaper.panchayatnama.com